International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 5; May 2017; Page No. 294-298

बालपत्रों के भाषाई स्वरूप का अध्ययन

शिवांगी
एम.फिल. शोधार्थी, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
आधुनिक युग में जनसंचार माध्यमों का विशेष महत्त्व है। जनसंचार के विविध माध्यमों जैसे रेडियो, टेलीविजन व समाचार पत्रों के बिना आज के समय में काम चलाना नामुमकिन तो नही परंतु मुश्किल अवश्य प्रतीत होता है। जनसंचार माध्यम भी इस बात से भली–भांति परिचित हैं और अपने पाठक व दर्शक वर्ग की रूचियों व आवश्यकताओं को देखते हुए उपयुक्त सामग्री का प्रचार प्रसार व प्रकाशन करते हैं। जनसंचार माध्यम का प्राचीन एंव प्रतिष्ठित साधन होने के कारण सामाचार पत्र भी इसका अपवाद नहीं हैं यही कारण है कि हमें समाचारपत्रों में आजकल महिलाओं व बच्चों के लिए विशिष्ट अंकों का प्रकाशन देखने को मिलता है। देश के कुछ प्रमुख हिन्दी समाचारपत्र बच्चों के लिए विशिष्ट रूप से उपयोगी बालपत्रों का प्रकाशन सप्ताह में एक दिन करते हैं जिनमें बच्चों की रूचि, मनोरंजन भाषा, साहित्य व कौशलों के विकास के समुचित सामग्री का प्रकाशन किया जाता है। ये बाल समाचारपत्र बालकों में साहित्यिक अभिरुचि विकसित करने के साथ–साथ भाषा संबंधी कौशलों जैसे–लिखने व पढने का विकास करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाचार–पत्रों के भाषाई शिक्षण व अधिगम में इन्हीं उपयोगों को देखते हुए एवं सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए इस शोध में बच्चों के लिए उपयोगी समाचार–पत्रों को विश्लेषित करने का विचार मेरे मन में आया। इस अध्ययन में पाया गया कि बाल समाचारपत्र भाषा के सुन्दर नमूने पेश करते हैं बच्चों के पठन–कौशलों के विकास में अखबारों का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। बालक सैद्धान्तिक रूप से ही नहीं वरन् व्यवहारिक जीवन में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों को सीख सकते हैं। अखबार में विषय–वस्तु के अनुरूप भाषा का प्रयोग होता है जिसे पढ़कर बच्चे सन्दर्भानुसार भाषा प्रयोग से अवगत होते हैं। समाचार–पत्र बच्चों को भाषा के नमूने उपलब्ध कराते हैं। बालसुलभ कौशलों का विकास होने से लेखन कौशल पर भी असर पड़ता है। समाचार–पत्रों से बच्चों का शब्द–कोश भी विस्तृत व संवर्द्धित हो जाता है। उनके व्यक्तिगत शब्द–कोश में नए शब्दों का समावेश होता रहता है। इन अखबारों में भाषा के विविध प्रयोग होते हैं जिनसे बच्चे परिचित होते हैं वहीं दूसरी और विकृत भाषा प्रयोग के उदाहरण भी इनमें देखने को मिलते है।

मूल शब्द: बालपत्रों, भाषाई, अध्ययन

प्रवस्ताना

भाषा विकास की दृष्टि से बाल समाचारपत्रों की भूमिका

बाल समाचार पत्र भाषा विकास की दृष्टि से भी महत्व रखते हैं। इन समाचार पत्रों की बच्चों में पठन कौशलों को विकसित करने, शुद्ध उच्चारण करने, मुहावरों और लोकोक्तियों का सही प्रयोग सिखाने व शब्द भंडार में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। भाषा विकास के साथ–साथ ये समाचार पत्र बच्चों का परिचय विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे कहानी, कविता, नाटक, गीत व खेलगीत से कराते हैं जिससे बच्चों में सौंदर्य बोध का विकास होता है और साहित्य रचना की प्रेरणा मिलती है। बाल समाचार पत्रों में बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री जैसे पहेलियां, चुटकुले व भाषायी खेल प्रकाशित होते हैं जिससे बच्चों की पढने में रूचि उत्पन्न होती है और वे स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित होते हैं। भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में ये समाचार पत्र एक उत्तम सहायक व पूरक सामग्री के रूप में प्रयोग किये जा सकते हैं इनके द्वारा बच्चों को शुद्ध उच्चारण, सही शब्द व वाक्य विन्यास, उचित मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों व विरामचिह्नों का प्रयोग सिखाया जा सकता है। बाल समाचार पत्रों की सफलता काफी हद तक इन समाचारपत्रों में प्रयुक्त की गई भाषा के स्वरूप पर निर्भर करती है अत इन समाचार पत्रों में बच्चों के मनोविज्ञान व आयु के स्तरानुसार भाषा का प्रयोग करना चाहिए। भाषा का स्वरूप बहुत अधिक जटिल व कठिन नही होना चाहिए शब्द तथा वाक्य बच्चों को समझ में आने वाले हों, और अधिकतर बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए। जनसंचार माध्यम में बच्चों के लिए लिखते समय बहुत अधिक मात्रा में व्यवहारिक, तकनीकी व पारिभाषिक शब्दावली से बचना चाहिये और अधिक से अधिक सरल व सहज भाषा जिसमें वाक्य छोटे–छोटे हो व मिश्रित व सयुंक्त वाक्य कम हो, शब्द अभिधेयार्थक हो, शैली प्रसाद गुण युक्त हो व उचित स्थान पर मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग हो ऐसी भाषा को प्राथमिकता देनी चाहिए। समाचार–पत्र बच्चों की समसामयिक जानकारी में वृद्धि करने के साथ–साथ भाषाई ज्ञान को बढ़ाने में भी सहायक होते है। समाचार–पत्र बच्चों के सामने भाषा के कलात्मक प्रयोग के नमूने प्रस्तुत करते हैं। समाचार–पत्र पठन कौशलों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विलियम एच. रूपले के अनुसार "प्राथमिक स्तर पर पठन कौशलों के विकास में समाचार–पत्र महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकते हैं। ये सस्ते व समसामयिक होते हैं एवं विभिन्न विषयों को समेटे हुए होते हैं। ये बहुत लोगों की रूचियों का ध्यान रखते हैं और छात्रों को पढ़ने के लिए उचित सामग्री प्रदान करते हैं।"

शोध विषय के अध्ययन की तार्किकता

समाचार–पत्रों को भाषा का महत्त्वपूर्ण श्रोत माना जाता है। समाचार–पत्र शिक्षक व विद्यार्थियों दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण साधन बन जाते हैं। समाचार–पत्रों की भाषा बच्चों को गहरे स्तर पर प्रभावित करती हैं। कुमार (1986) बच्चे की भाषा और अध्ययन पुस्तक में भाषा के प्रभाव के विषय में कहते हैं कि किसी घटना को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग की गई भाषा हमारी प्रतिक्रिया पर प्रभाव डालती है चाहे फिर हम उस घटना के प्रत्यक्ष गवाह हो या न हों। ऐसी अनेक चीजें होती है जो हमसे दूर स्थित होती हैं। ये चीज़े अखबार के माध्यम से खबर के रूप में हम तक पहुँचती है। एक तरह से अखबार हमें किसी घटना का चित्र बनाने में मदद करता है। यह उसी तरह है जैसे कोई

बच्चा सड़क पर कोई दृश्य देखकर अपनी माँ को बताएँ। किसी भी बयान की सटीकता बयान देने वाले के इरादे पर निर्भर करती है।
बच्चे भाषा के माध्यम से अपनी क्षमताओं रूचियों व दृष्टिकोणों को आकार देते हैं भाषा के इसी महत्त्व को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005) में भी स्वीकारा गया है– "भाषा व अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम अर्थ निर्माण और दूसरों के साथ बांटने के आधार तैयार करते है साथ ही वे सांकेतिकता वर्गीकरण स्मरण व दर्ज करने सम्बन्धी आधार भी बनाते हैं।" (पृष्ठ 30)
भाषा का स्वरूप गतिमान होता है। वह निरन्तर बदलती रहती है। पाठ्य–पुस्तकें एक निश्चित समय पर लिखी जाती हैं एवं उनमें सम्मिलित भाषाई सामग्री काफी हद तक सैद्धान्तिक व कृत्रिम हो जाती है। हालाँकि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के तहत लिखी गई पाठ्य पुस्तकों के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता। बल्कि इन पुस्तकों में अखबारों के लेखन का समायोजन सापफ दिखाई देता है। कई राज्यों में पाठ्य पुसतकें सभी पुरानी पद्धति की हैं। ऐसे में समाचार–पत्रों का प्रयोग भाषाई कौशल सिखाने में विशेष रूप से सहायक होता है क्योंकि समाचार–पत्रों की भाषा सजीवता लिए होती है। समाचार–पत्रों में भाषा के सन्दर्भानुसार विविध प्रयोग किये जाते हैं एवं भाषा का स्वरूप भी काफी हद तक बोलचाल की भाषा वाला होता है। समाचार–पत्रों से बच्चें भाषा के विविध व नवीन प्रयोग सीख सकते हैं। ऐसा ही विचार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005) में भाषा शिक्षण पर चर्चा करते हुए प्रस्तुत किया गया है– "निवेश–समृद्ध सम्प्रेषण का वातावरण भाषा शिक्षण की पूर्व शर्त है चाहे वह पहली भाषा हो या दूसरी। निवेश के अन्तर्गत आते हैं– पाठ्य पुस्तकें, शिक्षार्थी द्वारा चयनित पाठ और कथा पुस्तकालय जिसमें अनेक विधाओं के लिए जगह हो। छपी हुई सामग्री (उदाहरण के लिए युवा शिक्षार्थियों के लिए बड़ी पुस्तकें) एक से अधिक भाषा में समांतर पुस्तकें और मीडिया सामग्री (मैंगजीन/ समाचार–पत्र के स्तम्भ रेडियो/ओडियो कैसेट और प्रमाणिक सामग्री)" (पृष्ठ 45)
समाचार–पत्रों के भाषाई शिक्षण व अधिगम में इन्हीं उपयोगों को देखते हुए एवं सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए इस शोध में बच्चों के लिए उपयोगी समाचार–पत्रों को विश्लेषित करने का विचार मेरे मन में आया। साथ ही कुछ प्रश्न भी उठे जिन पर विचार करने के लिए इस अध्ययन के उद्देश्य तय किये गये।

शोध प्रश्न

- समाचार–पत्रों के बालोपयोगी खण्डों में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है।
- क्या समाचार पत्रों की भाषा किसी वर्ग विशेष के प्रति पूर्वाग्रहों से ग्रसित है?

शब्दावली का स्पष्टीकरण

- **बाल समाचार पत्र:** यहाँ बाल उपयोगी से तात्पर्य बच्चों के लिए समाचार–पत्रों में विशिष्ट रूप से जो सामग्री प्रकाशित होती है उससे वह सामग्री जो बच्चों के मनोरंजन, भाषाई सुधार, ज्ञान, शिक्षा, खेल व नेतिक विकास के लिए उपयोगी होती है।
- **समाचार–पत्र:** समाचार–पत्र से तात्पर्य दैनिक रूप से प्रकाशित होने वाले हिन्दी अखबारों से है।

अंतर्वस्तु विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में सर्वप्रथम शोध समस्या व उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। शोध उद्देश्यों व समस्या को ध्यान में रखकर शोध विधि के रूप में अंतर्वस्तु विश्लेषण को अपनाया गया। प्रतिदर्श के रुप में तीन प्रमुख हिन्दी समाचार–पत्रों हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स व जनसत्ता को चयनित किया गया प्रतिदर्श चयन के पश्चात आंकडो का संग्रहण किया गया। हिन्दुस्तान से नंदन, नवभारत टाइम्स से फ्यूचर्स स्टार एवं जनसत्ता से नन्ही दुनिया को आंकडों के रूप में संग्रहित किया गया। संग्रहण के बाद आंकडों का अवलोकन किया गया। अवलोकन में समाचार–पत्रों में कुछ विषय उभरकर आये। इन विषयों के आधार पर कहानी, सामान्य ज्ञान, मनोरंजन, चित्र, पहेली, भाषा आदि तालिकाओं का निर्माण किया। तालिका निर्माण के बाद प्रत्येक तालिका का श्रेणीकरण किया गया है। इन श्रेणियों को उपविषयों में विभाजित करके आवृत्ति के आधार पर प्रत्येक श्रेणी में आने वाली ईकाईयों व प्रतिशत की गणना की गई। इसके बाद गणना के आधार पर प्रत्येक विषय की समाचार–पत्र में स्थिति का वर्णन किया गया। विश्लेषण का शोध कार्य में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इस शोध में तीन हिन्दी अखबारों के दस–दस अंको का विश्लेषण किया गया है।
प्रत्येक खण्ड किसी–न–किसी विषय पर आधारित है। विश्लेषण करते समय भाषा, साहित्य एवं जनसंचार आधारित परिप्रेक्ष्य का सहारा लिया गया है। सबसे पहला खण्ड कहानी पर प्रस्तुत है।

कहानी

बच्चों की प्रिय विधा होने के कारण बाल समाचारपत्रों में अनेक प्रकार की कहानियां प्रकाशित की जाती हैं। इन पत्रों में पशु–पक्षियों, जानवरों, जंगल, राजा–रानी, अकबर–बीरबल, तेनालीराम, पंचतंत्र की कहानियां व नैतिक कथाएं आदि अनेक प्रकार की कहानियां देखने को मिलती हैं। इन कहानियों से बच्चों में पठन कौशल व साहित्यिक अभिरुचि का विकास होता है। मनोरंजन के साथ–साथ ये कहानियां बच्चों को विभिन्न प्रकार के पात्रों के बारे में जानने के अवसर बच्चों को प्रदान करती हैं जिससे बच्चों का भावनात्मक व चारित्रिक विकास होता है। कहानी पढ़ने के अनुभव बच्चों के सामने भाषा कौशल के चतुर नमूने प्रस्तुत करते है। कहानी पढकर बच्चे विभिन्न सन्दर्भों के अनुसार भाषा के विविध प्रयोग सीखते हैं। भाषा के नियमों व संरचनाओं से उनका परिचय होता है। कहानी के भाषीय लाभ पर विचार करते हुए कुमार (2008) में लिखते हैं 'कहानियों को सुनते हुए छोटे बच्चे अपनी मातृ भाषा के संम्पर्क में आते हैं। शब्द व वाक्य रचना का एक पूरा भंडार उनके हाथ लगता है। इस भंडार से वंचित रह जाने वाले बच्चे कुछ बडे होकर जब भाषा पढना और लिखना सीखते है, तब भाषा उनके लिए एक यान्त्रिक चुनौती बन जाती है।' (पृष्ठ 19)
प्रस्तुत शोध में तीनों समाचार–पत्रों में प्रकाशित कहानियों का विश्लेषण किया गया है। हिन्दुस्तान अखबार के प्रत्येक एक अंक में बच्चों के लिए कहानियाँ हैं, वहीं नवभारत टाइम्स व जनसत्ता में कहानियों के प्रकाशन में अनिरन्तता पाई गयी है। किसी अंक में कहानी छपती है किसी में नहीं। नवभारत टाइम्स में कुल 10 बालोपयोगी खण्डों में केवल 8 में एंव जनसत्ता में केवल 9 अंकों में कहानियों को प्रकाशित किया गया है। जहाँ तक विविधता का सवाल है, हिन्दुस्तान व जनसत्ता में नवभारत टाइम्स से अधिक विविधता देखने को मिलती है। कहानियों की भाषा सरल व सम्प्रेषणीय है। भाषा में चित्रात्मकता का गुण विद्यमान है। पात्रों के बीच संवाद के लिए संवादात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। कई पात्रों के संवाद लम्बे हैं।
नवभारत टाइम्स में हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित भाषा का प्रयोग किया गया है। कहानियों के शीर्षक से लेकर संवांदो में अंग्रेजी शब्दों की भरमार है जैसे– 'कछुआ रॉक्स और आपको लगा शॉक है ना!' कहानियों के संवाद छोटे व स्पष्ट है।

गीत

गीत एक लयबद्ध रचना होती है। गीत की रचना करते समय गीतों की गेयता का ध्यान रखना चाहिए। गीतों की गेयता ही एक ऐसी विशेषता है जो उन्हें अन्य रचनाओं से अलग करती है। गीत एक प्रकार की लघु कविता होती है जो गाई जा सकती है अथवा गीतों

में पिरोई जा सकती है। गीतों में कवि अपने व्यक्तिगत विचारों, अनुभवों तथा भावनाओं को संगीतात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत तालिका में जनसत्ता अखबार में प्रकाशित गीतों का श्रेणी करण किया गया है। शोध में सम्मिलित अन्य दो अखबारों हिन्दुस्तान व नवभारत टाइम्स में गीतों को प्रकाशित नहीं किया जाता हैं।

गीतों की रचना करते समय पाठक व श्रोता वर्ग की आयु भाषा व स्तर का ध्यान

रखा जाता है। कुमार (1986) में गीतों पर चर्चा करते हुए लिखते हैं कि 'बच्चों के खेलगीत भाषा के बेहद रचनात्मक और ताकतवर इस्तेमाल के निराले स्त्रोत हैं और वे भाषा के कई बुनयादी कौशल जैसे (पढ़ना) सिखाने के बहुत उपयोगी साधन हैं।' (पृष्ठ 4) कुमार का तर्क है कि नियमित रुप से गीतों को पढ़कर व सुनकर बच्चे भाषा की आधारभूत संरचनाएं ग्रहण करते है। गीतों को याद रखना सरल होता है। बच्चों को उन्हें याद रखने के लिए विशेष प्रयास नही करने पड़ते। बार–बार सुनने, पढ़ने व दोहराने से वे अपने आप याद हो जाते हैं। प्रस्तुत शोध में शामिल तीन अखबारों में से केवल जनसत्ता में गीतों को स्थान दिया गया है। समाचार–पत्र में सबसे अधिक संख्या खेल गीतों की है। कुछ गीत लय व गेयता के अनुरूप है पंरतु कुछ गीतों में लय व ताल का ध्यान नही रखा गया है। ऐसे गीत भी है जिनमें लय बनाने के लिए शब्दों को तोड–मरोड कर प्रस्तुत किया गया है। जैसे–

'तिरछी पगडी सनन हवाएं
फैशन कर गया हाल बेहाला' (जनसत्ता, रविवारीय, 4 जनवरी, पृष्ठ 2)

कुछ खेलगीतों में बच्चों के द्वारा खेल खेलते समय प्रयोग की जाने वाली शब्दावली प्रयोग की गई है। जिस प्रकार बच्चे खेल खेलते समय शब्दों का अपनी सुविधा के अनुरूप प्रयोग करते हैं। ऐसा ही कुछ प्रयोग यहाँ भी देखने को मिलता है। इन गीतों में ऐसे शब्द भी जिनका कोई मानक अर्थ नहीं निकलता है। जैसे–

'कक्का किक्की
आलू की टिक्की
मीठा बताशा
जादूगर पाशा
गिली गिली गप्पा
झूम झूम झप्पा
जुड गया मेला
शुरू करो खेला' (जनसत्ता, रविवारीय, 4 जनवरी, पृष्ठ 2)

गीतों में मुख्यतः खडी बोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है पंरतु कहीं कहीं लोकभाषा के शब्द जैसे– 'कही न माने काऊ की दद्दा की न दाऊ की' का प्रयोग भी किया गया है। समाचार–पत्र में कुछ गीत आदर्शवादी है जो बच्चों को मूल्य शिक्षा देते है। जैसे– 'खुशियां', 'मीठे बोल' तथा 'हंसी व गुस्सा'।

(क) 'खुशियों का तुम अमृत पी लो..
करो न दूजों की चुगली – निंदा
ऐसी बातों के लिए होंठ सी लो
सबसे करों तुम अच्छा बर्ताव
साथ अपने मुस्कान के मोती लो'

(ख) मीठे–मीठे तुम बोलो बोल
कानो में मिसरी दो घोल
कहो न कडवी बात कभी
बोलो तो बस मीठे बोल' (जनसत्ता, रविवारीय, 30 नवम्बर, पृष्ठ 4)

ये गीत उपदेशात्मक शैली में लिखें गये हैं। इनकी वाक्य रचना एंव शब्दावली कृत्रिम है। इसमें रोजमर्रा की भाषा का पुट नहीं है। इन गीतों की रचना बच्चों को मूल्यांत्मक शिक्षा देने के लिए की गई है। इन गीतों में बच्चों की सोच व भावनाएं नहीं झलकती है। ये व्यस्कों की अपेक्षाओं को दर्शाते हैं। इन गीतों में चीजों को बच्चों के दृष्टिकोण से न देखकर बडों की नज़र से देखा गया है।

पहेली

पहेलियाँ बच्चों में कौतूहल उत्पन्न करती हैं। पहेलियाँ हल करने से बच्चों में समस्या समाधान के कौशलों का विकास होता है। शब्द पहेलियाँ बच्चों को भाषा के नवीन प्रयोग सिखाती हैं। पहेलियाँ बच्चों में एक कुशल पाठक व श्रोता बनने के गुणों का विकास करती हैं। पहेली में ही समस्या का समाधान छिपा होता है, उस समाधान को ढूँढने के लिए पहेली को ध्यानपूर्वक सुनना या पढना आवश्यक होता है। गणित पहेली से बच्चों के दिमाग का व्यायाम होता है। बच्चे तेजी से गणना करना सीखते हैं। पहेलियाँ बच्चों में रचनात्मकता का विकास करती है वे कुछ नया करने व सीखने को प्रेरित होते हैं। सामान्य ज्ञान की पहेली को रिडिल्स नाम से छापा जाता है। इसमें घुमावदार भाषा में बच्चों से सवाल पूछे जाते हैं। जैसे–

गोल – गोल हैं जिसकी आंखे
भाता नहीं उजाला।
दिन में सोता रहता हरदम
रात विचरने वाला।। (नवभारत टाइम्स, 23 नवम्बर, 2014, पृष्ठ 13)

ऐसी पहेलियाँ बच्चों को नवीन भाषा प्रयोगों से परिचित कराती हैं। गणित पहेली व तार्किक पहेलियों को ब्रेन जिम के नाम से प्रकाशित किया जाता है। इसमें पहाडे वस्तुओं को सही क्रम में व्यवस्थित करने से संबंधित प्रश्न होते हैं। शब्द पहेली को मेक ए वर्ड शीर्षक से प्रकाशित किया जाता है। इसमें विभिन्न अंग्रेजी अक्षरों को मिलाकर एक सार्थक शब्द बनाना होता है। जैसे– विसंजवइस से विवजइंसस बनेगा। चित्र पहेली में दो चित्रों में समानता व अंतर ढूढंने को कहा जाता है। हिन्दुस्तान व नवभारत टाइम्स दोनों समाचार–पत्रों में पहेलियों का स्तर बच्चों के अनुरूप है ओर वे बच्चों को करके सीखने के अच्छे अवसर प्रदान करती हैं।

भाषा

सामान्य रूप से भाषा को आपसी अंतक्रिया व सम्प्रेषण का माध्यम माना जाता है। भाषा के द्वारा ही हम अपने विचारों और अनुभवों को दूसरे के साथ बांटते है। भाषा न हो तो मनुष्य का समाज में काम नहीं चल सकता। भाषा ही वह शक्ति है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करती है। इसी के द्वारा मनुष्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अपनी संस्कृति को हंस्तारित करता है। प्रस्तुत तालिका में अखबारों की भाषा के स्वरुप पर विचार किया गया ळें

तालिका 1: अखबरों में भाषा का स्वरूप

भाषा का स्वरूप	हिन्दुस्तान (नंदन)	नवभारत टाइम्स (फ्यूचर्स स्टार)	जनसत्ता (नन्हीं दुनिया)
मानक हिन्दी			✓
हिन्दी व अंग्रेजी मिश्रति भाषा	✓	✓	
बोलचाल की भाषा	✓	✓	✓

भाषा लिखित, मौखिक व आंगिक किसी भी रूप में हो सकती है। कुमार (1986) के अनुसार 'शिशु के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किन्तु मजबूत ताकत की तरह भाषा संसार के प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रूचियों, क्षमताओं, यहां तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है।' (पृष्ठ 1) भाषा सम्प्रेषण का साधन होने के साथ–साथ ऐसा माध्यम भी है जिसके द्वारा हम बाहरी जगत को अपने अंदर रचते हैं। प्रस्तुत शोध में चूंकि अखबारों की भाषा का विश्लेषण किया गया है अतः मुख्यतः भाषा के लिखित स्वरूप पर ही विचार किया जायेगा। इस शोध में सम्मिलित तीनों समाचार–पत्र हिंदी के हैं परंतु भाषाई आधार पर जनसत्ता ही हिंदी अखबार की श्रेणी में रखा जा सकता है। हिन्दुस्तान व नवभारत टाइम्स में भाषा के स्तर पर संक्रमण देखने को मिलता है। यह माना जाता है कि जनसंचार का माध्यम होने के कारण अखबारों की भाषा सरल व बोलचाल की भाषा होनी चाहिए पंरतु नवभारत टाइम्स ने इस पर अत्यंत लचीला रवैया अपनाया है।

नवभारत टाइम्स में भाषा के स्तर पर सबसे अधिक संक्रमण देखने को मिलता है। नवभारत टाइम्स में हिंदी भाषा केवल कहने के लिए है। बालोंपयोगी खंड के नाम छठज् थ्नजनतम ैजंत से लेकर समाचार–पत्र की सम्पूर्ण विषय वस्तु में हिंदी– अंग्रेजी मिश्रित भाषा की भरमार है। बालोंपयोगी खंड का शीर्षक अंग्रेजी भाषा व लिपि में लिखा गया है। समाचार–पत्र का एक भी शीर्षक हिन्दी भाषा में नही है। सभी शीर्षक या तो अंग्रेजी या हिन्दी–अंग्रेजी मिश्रित भाषा में है। जैसे– निद`जवतलए पिसस जीम बवसवनतए चवूमत चपससए इतंपद हलउ आदि। हिन्दी शीर्षक को भी रोमन लिपि या हिन्दी–अंग्रेजी मिश्रित लिपि में लिखा गया है। जैसे – इवसव कपस ाप ीवसवए दंनहीजल नीटू। समाचार–पत्र में हिंदी–अंग्रेजी मिश्रित भाषा की अधिकता है। कहीं–कहीं पर पूर्णत अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग भी किया गया है। विचार शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित सामग्री की भाषा पूणर्तं अंग्रेजी है। जैसे– प्लमेजमतकंल पे दवज वनते जव तमबवअमत, इनज जवउवततवू पे वनते जव ूपद वत सवेमष (नवभारत टाइम्ट, 23 नवम्बर, 2014, पृष्ठ 13) हिन्दी का समाचार–पत्र होने के उपंरात अंग्रेजी भाषा शिक्षण के लिए इंग्लिश विंग्लिश व मेक ए वर्ड नाम से विशेष कॉलम प्रकाशित होते है। हिन्दी अखबार में अंग्रेजी भाषा के ये कॉलम उस विचारधारा को पुष्ट करते जो सबके लिए अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक मानती है। इस प्रकार के कॉलम हिन्दी भाषा की अवेहलना करते हैं एंव परोक्ष रूप से अंग्रेजी भाषा को हिन्दी से अधिक महत्व देते हैं।

हिन्दुस्तान अखबार में मानक हिंदी के स्थान पर बोलचाल की भाषा व हिंदी–अंग्रेजी मिश्रित भाषा अधिक है। यहाँ पर भी हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित भाषा में लिखित शीर्षक देखने को मिलते है। जैसे– फ्री टाइम व इनफोटेनमेन्ट। यद्यपि नवभारत टाइम्स की अपेक्षा हिन्दुस्तान में देवनागरी लिपि का प्रयोग हुआ है। विषयवस्तु में भी अंग्रेजी के शब्द देखे जा सकते है। जैसे– सांइस इज फन, फनी एनिमल आदि। समाचार–पत्र में अधिकतर आम सरल व संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग हुआ है।

भाषा प्रयोग में जनसत्ता अखबार ने सावधानी बरती है एवं मानक हिंदी का प्रयोग किया है। हालाकिं भाषा का स्वरूप कहीं–कहीं कलिष्ट हो जाता है जैसे– 'मछलियां प्रसन्न होने पर क्रीडा–कल्लो करने लगती है और जब उन्हें पानी से निकाल कर प्राणहरण किया जाता है, तो उनकी छटपटाहट प्रत्येक भावनाशील का हृदय हिला देती है।' ऐसी भाषा कुछ ही लेखो में देखने को मिलती है। अधिकतर सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। समाचार–पत्र की भाषा हिन्दी व लिपि देवनागरी है। समाचार–पत्रों में संख्याओं को रोमन लिपि में लिखा गया है लेकिन अन्य विषय वस्तु में केवल हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है। अंग्रेजी भाषा के शब्दों व वाक्यों का प्रयोग नहीं किया गया है। कुछ गीतों में लोकभाषाओं के शब्द देखने को मिलते हैं। भाषा के दृष्टिकोण से विचार करें तो जनसत्ता में शुद्ध, स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण भाषा का प्रयोग किया गया है। जनसत्ता अखबार में हिन्दी भाषा का मानक स्वरूप देखने को मिलता है। अखबार अच्छी एवं समृद्ध हिन्दी सिखाने के एक स्रोत के रूप में उभरकर आता है। अखबार में मिश्रित भाषा प्रयोग नहीं किया गया है। कहानियों की भाषा पात्रों के अनुकूल है परंतु कुछ गीतों में बच्चों के अनुकूल भाषा का प्रयोग नहीं किया गया है। इन गीतों की भाषा बनावटी है एवं बच्चे रोजमर्रा में जैसी भाषा का प्रयोग करते हैं वैसा पुट यहाँ देखने को नहीं मिलता है। कुछ गीत ऐसे भी हैं जिनमें बच्चों के द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा के दर्शन होते हैं। खेल गीतों में ऐसी ही भाषा का प्रयोग किया गया। जिससे बच्चे आसानी से संबंध बना सकते हैं। नवभारत व हिन्दुस्तान अखबार में हिन्दी–अंग्रेजी मिश्रित भाषा प्रयोग की गई है। भाषा में अंग्रेजी व हिन्दी के वाक्यों व शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है जिससे अटपटापन महसूस होता है। कहानी की भाषा पात्रों के अनुरूप है व सरल है। चुटकुलों एवं हास्य–व्यंग्य की सामग्री में हल्की–फुल्की भाषा का प्रयोग किया गया है। अखबार में इस तरह की भाषा के प्रयोग से भाषा के मानक स्वरूप को नुकसान पहुँचता है। ऐसी भाषा को पढ़ने वाले बच्चों को भले ही आसान लगें किन्तु वह उनके अन्दर भाषा की एक विकृत समझ उत्पन्न कर सकती है। नवभारत टाइम्स में भाषा के स्तर पर सबसे अधिक संक्रमण देखने को मिलता है। अखबार में अंग्रेजी भाषा व लिपि दोनों में लिखित शब्द व वाक्य देखने को मिलते हैं। अखबार में हिन्दी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी भाषा के ज्ञान में वृद्धि के लिए विशेष कॉलम प्रकाशित होते हैं। अखबार का अंग्रेजी भाषा के प्रति इस प्रकार का झुकाव बच्चों में हिन्दी के प्रति कम व अंग्रेजी के प्रति अधिक आकर्षण उत्पन्न करता है। कुमार (1986) का भी यही तर्क है कि किसी भी घटना को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग की गई भाषा हमारी प्रतिक्रिया पर प्रभाव डालती है। कुमार (1986) 'हम किसी घटना के प्रत्यक्ष गवाह हों या ना हों उस घटना को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग की गई भाषा हमारी प्रतिक्रिया पर असर डालती है।' (पृष्ठ 7) ऐसी स्थिति में जब बच्चे अखबारों में हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित भाषा को पढ़ते हैं तो परोक्ष रूप से ही सही उन्हें इस प्रकार की भाषा प्रयोग करने का एक सन्देश मिलता है। हालांकि दूसरी भाषा के शब्दों से बच्चों को अवगत कराकर उनके शब्दकोश में वृद्धि करना एक अच्छी पहल है लेकिन यह रवैया केवल अंग्रेजी भाषा के संबंध में अपनाया गया। भारत की अन्य क्षेत्रीय व लोकभाषाओं के शब्दों का प्रयोग हिन्दुस्तान व नवभारत टाइम्स दोनों में से किसी भी अखबार में नहीं किया गया है।

नवभारत टाइम्स में अंग्रेजी भाषा के शब्दों व वाक्यों का प्रयोग व्यवसायिकता को ध्यान में रखकर किया गया है। अखबार ने अंग्रेजी भाषा के दबाव को देखते हुए अपने अखबार की बिक्री व लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ऐसी भाषा का प्रयोग किया है। अंग्रेजी भाषा के शब्दों

व वाक्यों का स्वरूप मानकीय नहीं है केवल बच्चों को लुभाने के लिए ऐसी भाषा अपनायी गई है। हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं के सम्बंध में अखबार ने लचीला रूप अपनाया है। बच्चों के लिए लिखते समय सरल व स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना एक बुनयादी शर्त होती है जिस पर नवभारत टाइम्स खरा नहीं उतरता है।

अखबारों में सामान्य तौर पर कविता व कहानी में चरित्रों का मानवीकरण कर दिया गया है। जिससे इनमें स्थित उपदेशों एवं नैतिक शिक्षा को बच्चों तक आसानी से पहुँचाया जा सकें। पंचतंत्र एवं नैतिक शिक्षा देने वाली कहानियाँ बड़ों की बातें करती है, बच्चों के लिए उनका अधिक महत्त्व नहीं है। इन समाचार–पत्रों में बच्चों को ध्यान में रखकर साहित्य की रचना नहीं की गई है। बल्कि बड़ों के नजरिए से लिखे गए साहित्य को बच्चों के लिए प्रस्तुत किया गया है। कहानियों की भाषा एवं विषय–वस्तु बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई न हो तो कृत्रिमता लिए हुए है एवं बड़े लोगों की विचारधारा को बच्चों के ऊपर थोपती नज़र आती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एन.सी.ई.आर.टी. (2006). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.
2. क्रिपेनड्रा, कॉलास (1980). *कन्टेन्ट एनालिसिस : एन इन्ट्रोडेक्शन टू इट्स मेथेडलॉजी*.लंदन : सेज पब्लिकेशन.
3. 'जनसत्ता' दैनिक समाचार पत्र दिल्ली संस्करण. अक्टू. 2014–जनवरी 2015.
4. 'नवभारत टाइम्स' दैनिक समाचार पत्र दिल्ली संस्करण. अक्टू. 2014–जनवरी 2015.
5. मंजूर, तवा कोली (2013). दि ऐफेक्ट ऑफ यूजिंग प्रिंट मीडिया आन चिल्ड्रेन एल टू लिटरेजी डेवलपमेंट : ए लॉगट्टिूड स्टडी. *जर्नल ऑफ लैग्वेज टीचिंग एण्ड रिसर्च*, वाल्यूम–4, अंक–4. (पृष्ठ 570–578)
6. मानस, मुकेश (2006). *मीडिया लेखन*, सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली : स्वराज प्रकाशन.
7. 'हिन्दुस्तान' दैनिक समाचार पत्र दिल्ली संस्करण. अक्टू. 2014–जनवरी 2015.